NEERAJ®

दक्षिण एशिया का एक परिचय

(Introduction to South Asia)

B.P.S.E.-144

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Bhavya Gupta

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

दक्षिण एशिया का एक परिचय

(Introduction to South Asia)

Question Paper–June–2024 (Solved) 1

Question Paper–December–2023 (Solved) 1

Question Paper–June–2023 (Solved) 1-3

Question Paper–December–2022 (Solved) 1-2

Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

दक्षिण एशिया : एक परिचय
(South Asia: An Introduction)

1. एक भू-भाग के रूप में दक्षिण एशिया 1
(South Asia as a Region)

2. दक्षिण एशिया में स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद के लिए संघर्ष 10
(Struggle for Independence and Nationalism in South Asia)

दक्षिण एशिया में समाज और राजनीति
(Society and Polity in South Asia)

3. दक्षिण एशिया में विविधता और बहुलवाद 24
(Diversity and Pluralism in South Asia)

4. भारत, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश 35
में राजनीतिक संरचनाएँ और प्रक्रियाएँ
(Political Structures and Processes in India, Pakistan and Bangladesh)

5. श्रीलंका और मालदीव में राजनीतिक संरचनाएँ एवं प्रक्रियाएँ 48
(Political Structures and Processes in Sri Lanka and the Maldives)

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

6. अफगानिस्तान, भूटान तथा नेपाल की राजनीतिक संरचनाएँ एवं प्रक्रियाएँ (Political Structures and Processes in Afghanistan, Bhutan and Nepal) 59

विकास के मुद्दे
(Issues in Development)

7. दक्षिण एशिया में मानव विकास और क्षेत्रीय असंतुलन (Human Development and Regional Imbalances in South Asia) 69

8. दक्षिण एशिया में प्रवास (माइग्रेशन) और विकास की संरचना (Migration and Development) 80

9. पर्यावरण एवं विकास (Environment and Development) 92

10. दक्षिण एशिया में सशस्त्र संघर्ष (Armed Conflicts in South Asia) 105

11. क्षेत्रीय विवाद (Territorial Disputes) 117

12. जल विवाद एवं जल सहभाजन (Waters Disputes and Water Sharing) 127

13. दक्षिण एशिया में नागरिक समाज (सिविल सोसाइटी) (Civil Society in South Asia) 139

14. सार्क (SAARC) 149

15. दक्षिण एशियाई सुरक्षा की गतिशीलता (Dynamics of South Asian Security) 159

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

दक्षिण एशिया का एक परिचय

(Introduction to South Asia)

B.P.S.E.-144

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में* **दो** *खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम* **दो** *प्रश्न चुनते हुए, किन्हीं* **पाँच** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. दक्षिण एशिया में सार्क की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-153, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-154, प्रश्न 2

प्रश्न 2. दक्षिण एशिया में सुरक्षा के विभिन्न आयामों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-160, 'दक्षिण एशिया की सुरक्षा गतिशीलता'

प्रश्न 3. दक्षिण एशिया में मानव विकास और क्षेत्रीय असंतुलन के विभिन्न पहलुओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-73, 'दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय असंतुलन' तथा पृष्ठ-74, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) साम्राज्यों का कब्रिस्तान

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-114, प्रश्न 12

(ख) वैश्विक जलदृश्य

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-131, प्रश्न 2

भाग-II

प्रश्न 5. दक्षिण एशिया में सतत् विकास को बढ़ावा देने के उपायों और नीतिगत सुधारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-94, 'सतत् विकास और नीतिगत सुधार' तथा पृष्ठ-98, प्रश्न 4

प्रश्न 6. नेपाल और भूटान में राजनीतिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-60, 'भूटान' तथा पृष्ठ-61 'नेपाल'

प्रश्न 7. श्रीलंका में जातीय संघर्षों की उत्पत्ति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-52, प्रश्न 2

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) भारत और पाकिस्तान के बीच क्षेत्रीय संघर्ष

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-118, 'भारत और पाकिस्तान के बीच क्षेत्रीय विवाद'

(ख) दक्षिण एशिया में जलीय राजनीति

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-128, 'जल और सुरक्षा या जल-राजनीति'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

दक्षिण एशिया का एक परिचय

(Introduction to South Asia)

B.P.S.E.-144

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में* **दो** *खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम* **दो** *प्रश्न चुनते हुए, किन्हीं* **पाँच** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. दक्षिण एशिया के भू-रणनीतिक महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 4

प्रश्न 2. दक्षिण एशिया की सुरक्षा गतिशीलता पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-160, 'दक्षिण एशिया की सुरक्षा गतिशीलता'

प्रश्न 3. मानव विकास को परिभाषित कीजिए और इसकी चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-69, 'मानव विकास को परिभाषित करना', पृष्ठ-74, प्रश्न 3

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) पारराष्ट्रीय संगठित अपराध

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-161, 'अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध'

(ख) वैश्वीकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-141, 'वैश्वीकरण और नागरिक समाज'

खण्ड-II

प्रश्न 5. विकास की बदलती प्रवृत्तियों और दक्षिण एशिया में पर्यावरण पर उनके प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-96, प्रश्न 2

प्रश्न 6. श्रीलंका में राजनीतिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-52, प्रश्न 2

प्रश्न 7. दक्षिण एशिया में सशस्त्र संघर्षों की बदलती प्रकृति और विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-105, 'सशस्त्र संघर्षों का बदलता स्वरूप और क्षेत्र में ऐसे संघर्षों की विशेषताएँ'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) आतंक पर वैश्विक युद्ध

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-60, 'आतंक पर वैश्विक युद्ध' तथा पृष्ठ-67, प्रश्न 11

(ख) 'सर क्रीक लाइन' विवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-118, 'सर क्रीक' तथा पृष्ठ-122, 'सर क्रीक'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

दक्षिण एशिया का एक परिचय
(Introduction to South Asia)

दक्षिण एशिया : एक परिचय
(South Asia: An Introduction)

एक भू-भाग के रूप में दक्षिण एशिया
(South Asia as a Region)

1

परिचय

एक भू-भाग भौगोलिक, ऐतिहासिक अथवा सांस्कृतिक और क्षेत्रीय रूप से समीपस्थ, अनेक राष्ट्र व राज्यों से मिलकर बनता है। ये सभी राष्ट्र-राज्य अन्य क्षेत्रों से अलग होते हैं तथा उनके अस्तित्व में बाधा उत्पन्न नहीं करते। दक्षिण एशिया के विभिन्न राष्ट्रों में भी सामान्य भौगोलिक विशेषताएँ उपस्थित हैं, जिनसे आंतरिक एवं बाह्य राजनीतिक भूगोल का निर्माण हुआ है। इनकी जातीय, भाषाई और सांस्कृतिक पहचान आधुनिक दक्षिण एशिया का निर्माण करती है। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश को दक्षिण एशिया के देश या भारतीय उपमहाद्वीप के देश कहा जाता है, जिसमें नेपाल और भूटान को भी शामिल कर लिया जाता है। ये सभी देश मानव विकास तथा आर्थिक विकास के स्तर पर एक साथ खड़े हुए हैं।

दक्षिण एशिया एक अनौपचारिक शब्दावली है, जिसका प्रयोग एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग के लिए किया जाता है। सामान्यतः इस शब्द से आशय हिमालय के दक्षिणवर्ती देशों से है। यद्यपि दक्षिण एशिया शब्द का उपयोग अनेक बहुपक्षीय संस्थानों, जैसे– आईएमएफ, विश्व बैंक, डब्ल्यूटीओ तथा संयुक्त राष्ट्र आदि के द्वारा एक उप क्षेत्रीय इकाई के रूप में किया जाने लगा है। इन सभी देशों ने मिलकर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) का निर्माण किया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

दक्षिण एशिया का भूगोल

दक्षिण एशिया की जनसंख्या लगभग 1.986 अरब या दुनिया की आबादी का लगभग एक चौथाई भाग है, जो इसे दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला और सबसे ज्यादा घनी आबादी वाला भौगोलिक क्षेत्र बनाती है। सभी देशों में जातीय भाषाएँ और धार्मिक आधारों पर तमाम तरह की विविधताएँ पाई जाती हैं। दक्षिण एशिया का विस्तार हिमालय बेल्ट तथा दक्षिण प्रायद्वीप में दक्कन के पठार और बीच में इंडो गंगा और रेगिस्तानी मैदानों द्वारा निर्धारित राष्ट्रीय सीमाओं के द्वारा देखने को मिलता है। दक्षिण एशिया में द्वीपीय राज्य श्रीलंका और मालदीव तथा भू-आबद्ध राज्य नेपाल और भूटान अपनी भौगोलिक विशेषताओं से विश्व को प्रभावित करते हैं।

दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों के बीच अनेक राजनीतिक समस्याएँ भी हैं, जैसे–भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु नदी तथा भारत-बांग्लादेश में गंगा नदी के जल को लेकर विवाद। भारत और अन्य देशों के बीच सीमा पर होने वाला अवैध प्रवास, आतंकवाद तथा उग्रवाद का कारण है। दक्षिण एशिया में भारत लगभग 75% भू-भाग, 70% आबादी तथा संसाधनों का स्वामित्व रखता है। असमानताओं के उपरांत भी भौगोलिक समानताओं के चलते राष्ट्रों को जलवायु परिवर्तन, चक्रवात, बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए सहयोगी रणनीति बनाने की जरूरत पड़ती है।

दक्षिण एशिया का इतिहास

आधुनिक दक्षिण एशिया का निर्माण ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान निर्मित राजनैतिक और प्रशासनिक संरचनाओं के आधार पर हुआ है। दक्षिण एशिया की सिंधु घाटी सभ्यता, विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। वहीं दक्षिण एशिया आर्य वैदिक काल, बौद्ध धर्म का उद्भव तथा इस्लामी शासन जैसे महत्त्वपूर्ण कालक्रमों का साक्षी है।

2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में सिंधु नदी की घाटियों के समीप वर्तमान पाकिस्तान में बसी कांस्य युग के नाम से जानी जाने वाली सिंधु घाटी सभ्यता शहरी नियोजन, जल निकासी व्यवस्था, ईंट के घरों,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

धातु विज्ञान और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध थी। यहां के प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो थे। 1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक वैदिक रचना काल में इसी उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग से इंडो गंगा मैदान तक के सहयोग के प्रसार केंद्र थे। इसी काल में बाद में बौद्ध और जैन धर्म का उद्भव हुआ, जिससे त्याग, तप और ज्ञान का विस्तार, सीलोन और दक्षिण-पूर्व एशिया तथा चीन तक हुआ।

उपमहाद्वीप में अरबों, तुर्कों और मंगोलों के आगमन से मुगल शासकों का राजनीतिक सुदृढ़ीकरण तथा राजनीतिक धार्मिक व्यवस्था का आरोपण देखा गया, जो कि दक्षिण एशिया की समकालीन बहुसांस्कृतिक पहचान का कारण है। दक्षिण एशिया में युद्ध संघर्षों के कारण जातीयता और भाषा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। तत्पश्चात 2 शताब्दियों से भी अधिक समय तक चलने वाला ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन आधुनिक दक्षिण एशिया के प्रशासनिक और कानूनी स्वरूप तथा राष्ट्रवादी आंदोलनों के उदय और सांप्रदायिक आधार पर विभाजन का आधार बना। उदाहरण के लिए, भारत-पाकिस्तान संघर्ष, बांग्लादेश मुक्ति, श्रीलंका में सिंहल तमिल संघर्ष आदि।

दक्षिण एशिया में राजनीति

उपनिवेश काल के उपरांत दक्षिण एशिया में राजनीति का स्वरूप सामान्य एवं विशिष्ट दोनों प्रकार का रहा है। अधिकतर देशों में राजनीतिक व्यवस्था विभिन्न रूपों में देखने को मिलती है। धर्म, जाति तथा भाषा के आधार पर विविधता के उपरांत भी राजनीतिक प्रक्रिया विशिष्ट रही है। वहीं दक्षिण एशिया में चुनावी लोकतंत्र तथा लोकतांत्रिक राजनीतिक स्वरूप परिपक्व दिखाई पड़ता है।

सरकार का स्वरूप

दक्षिण एशिया के अधिकतर देशों ने आजादी प्राप्त कर नए संविधान तथा द्विसदनीय विधायिका के संसदीय लोकतंत्र के वेस्टमिंस्टर मॉडल को अपनाया है। अन्य देशों में अर्ध-राष्ट्रपति प्रणाली, जिसके अंतर्गत राष्ट्रपति का चुनाव प्रत्यक्ष रूप से होता है, का चयन किया है। कुछ देशों में संवैधानिक राजतंत्र अर्थात् संसदीय प्रणाली को अपनाया गया है।

भारत ने संसदीय प्रणाली को आत्मसात् किया है, जिसके अंतर्गत केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का वितरण किया गया है। संसद के दो सदन राज्यसभा तथा लोकसभा हैं। प्रधानमंत्री तथा उनकी मंत्रिपरिषद् संसद के प्रति जवाबदेह होती है। राष्ट्रपति राज्य का प्रमुख माना जाता है। पाकिस्तान में भी द्विसदनीय विधायिका चलन में है, जिसके अंतर्गत सीनेट तथा नेशनल असेंबली के रूप में क्रमशः उच्च सदन और निम्न सदन होते हैं। आरंभ में पाकिस्तान में अर्ध-राष्ट्रपति शासन प्रणाली विद्यमान थी, जिसमें सेना की भूमिका अधिक थी।

बांग्लादेश में जातीय संसद के अंतर्गत राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल की नियुक्ति की जाती है तथा विशिष्ट आबादी वाले जिलों के आधार पर चुनावी निर्वाचन क्षेत्रों का निर्धारण होता है। एकसदनीय विधायिका वाली नेपाल की संसद में प्रतिनिधि सभा के 7 प्रांतों के निर्वाचन क्षेत्रों से प्रत्यक्ष चुनाव होते हैं तथा नेशनल असेंबली में प्रांतों से इलेक्टोरल कॉलेज द्वारा चुने गए सदस्य सम्मिलित होते हैं। नेपाल में 2008 में राजशाही का अंत किया गया तथा राष्ट्रपति को राज्य का प्रमुख बनाया गया। श्रीलंका में 1978 के संविधान के पश्चात् अर्ध-कार्यकारी अध्यक्षता की प्रणाली विद्यमान है, जहां राज्यों की भूमिका तथा सरकार प्रमुख होती है तथा प्रधानमंत्री उसके अनुसार कार्य करता है। इससे पूर्व श्रीलंका में द्विसदनीय विधायिका विद्यमान थी, जिसे 1972 में नेशनल स्टेट असेंबली तथा वर्तमान संसद में सीनेट को समाप्त कर एक सदनीय बना दिया गया। मालदीव की सदनीय विधायिका में राष्ट्रपति एक प्रमुख के रूप में राज्य और सरकार पर संपूर्ण नियंत्रण रखता है। भूटान में 2007 में द्विसदनीय प्रणाली के अंतर्गत उच्च सदन के रूप में राष्ट्रीय परिषद् तथा निचले सदन में राष्ट्रीय सभा का निर्माण किया गया। इस व्यवस्था में राजा एक संवैधानिक सम्राट की भांति प्रधानमंत्री और मंत्रिमंडल को नियुक्त करता है।

इस प्रकार दक्षिण एशियाई देशों में विभिन्न प्रकार की सरकारें देखने को मिलती हैं, जो राजनीतिक परिस्थितियों के आधार पर संशोधित की जाती रही हैं।

राजनीतिक दल

दक्षिण एशियाई देशों में विभिन्न राजनीतिक दलों के विकास तथा प्रदर्शन में समानताएँ पाई जाती हैं। कुछ राजनीतिक दल प्रोटो-राष्ट्रवाद अर्थात् एक राष्ट्रवादी पहचान से जुड़े हैं, जैसे-भारत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, बांग्लादेश में अवामी लीग और सीलोन नेशनल कांग्रेस इत्यादि। औपनिवेशिक काल की समाप्ति के पश्चात् लोकतंत्र के बढ़ते प्रभाव में अनेक देशों ने राजनीतिक विचारधारा तथा जातीयता आदि मुद्दों के आधार पर बहुदलीय प्रणाली विकसित की। पाकिस्तान की पीपुल्स पार्टी, श्रीलंका फ्रीडम पार्टी, नेपाली कांग्रेस पार्टी समाजवादी वैचारिक सोच से उत्पन्न हुई। भारत में अग्रणी राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी, भारतीय जनसंघ तथा जनता पार्टी के गठबंधन से बनी है। वहीं बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर आधारित है। विभिन्न देशों में क्षेत्रीय तथा उप-क्षेत्रीय आकांक्षाओं को मुद्दा बनाकर अनेक राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ है, जिससे बहुदलीय प्रणाली विकसित हुई है।

राजनीतिक प्रक्रियाएँ

दक्षिण एशियाई देशों में अधिकतर राजनीतिक दलों का अभिसरण प्रारूप एक समान दिखाई देता है। सर्वप्रथम दक्षिण एशिया में अनेक राजनीतिक दल वंशवाद की राजनीति पर निर्मित थे। उदाहरण के लिए, भारत का नेहरू-गाँधी परिवार, पाकिस्तान का भुट्टो शरीफ परिवार, श्रीलंका का कुमारतुंगा राजपक्षे परिवार तथा नेपाल का कोईराला परिवार आदि। वंशवाद की अवधारणा

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

राजनीतिक इतिहास में संघर्ष मुक्ति और बलिदान की स्मृति के रूप में प्रमुख चुनावी मुद्दा बनकर उभरी है। हालाँकि कई बार मतदाताओं ने राजनीतिक दलों के प्रदर्शन को मान्यता दी है, जिसके चलते वंशवाद की नीति विफल हो जाती है। दक्षिण एशिया में धर्म तथा जाति के आधार पर बढ़ती राजनीतिक प्रवृत्ति के कारण दलीय राजनीति सुदृढ़ हुई है। दक्षिण एशिया में धार्मिक अल्पसंख्यकों, सांप्रदायिक दंगों तथा क्षेत्रवाद की राजनीति, पहचान की राजनीति के परिणाम हैं।

अंतर-क्षेत्रीय राजनीति

राजनीतिक गतिशीलता विभिन्न देशों का आंतरिक मुद्दा रहा है। जातीयता, भाषा, धर्म आदि के आधार पर पहचान देश में समय-समय पर अंतर्संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न करते हैं। भारत में ऐसे संघर्ष सामान्य हो गए हैं, जिसके कारण संबंधित देशों के साथ भारत के संबंध भी प्रभावित होते हैं। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में हुए नरसंहार तथा शरणार्थी संकट और बांग्लादेश की आजादी में भारत की भूमिका, श्रीलंका में सिंहल तमिल संघर्ष में भारत की असफल मध्यस्थता राजशाही के विरुद्ध संघर्ष के दौरान नेपाल की आंतरिक राजनीति में उथल-पुथल आदि इसके उदाहरण हैं। देश की घरेलू राजनीति से जुड़े मुद्दे असंतोषजनक परिणाम देते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारत को क्षेत्र की राजनीति में सम्मिलित होने की अपेक्षा संबंधों को सुदृढ़ करने की ओर प्रयास करने चाहिए।

वैश्विक भू-राजनीति में दक्षिण एशिया

एशिया भू-राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में दक्षिण एशिया का भौगोलिक स्थिति के कारण राजनीति में अद्वितीय स्थान है। इस क्षेत्र का निर्माण वैश्विक रणनीतिकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले रणनीतिक निर्माण के रूप में किया गया था। यद्यपि दक्षिण एशिया में शीत युद्ध के दौरान तथा सोवियत संघ के पतन के बाद विगत कुछ वर्षों में वैश्विक और क्षेत्रीय भू-राजनीतिक परिवर्तनों में इसका महत्त्व और अधिक हो गया है।

शीत युद्ध के दौरान दक्षिण एशिया

शीत युद्ध के आरंभिक वर्षों में सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच प्रतिद्वंद्विता ने बाद के वर्षों में भारत तथा पाकिस्तान के विभाजन को अंतरिम रूप दिया तथा दोनों देशों ने विभिन्न राजनीतिक स्वरूप अपनाए। एक ओर भारत ने 1960 के दशक में गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई तथा 1971 में सोवियत संघ के साथ शांति मित्रता और सुरक्षा की संधि की, तो दूसरी ओर पाकिस्तान 1950 में दक्षिण-पूर्वी एशियाई संधि संगठन और केंद्रीय संधि संगठन में सम्मिलित हो गया। वहीं, ये दोनों देश गुटनिरपेक्षता के सदस्य बन गए तथापि दोनों ने अपनी आत्मीयता को बदलने के लिए कुछ नहीं किया और 1971 के युद्ध में दोनों के बीच का संघर्ष प्रत्यक्ष हो गया। 1979 में अफगानिस्तान पर सोवियत संघ के हमले में पाकिस्तान ने सोवियत संघ का विरोध करते हुए अफगान मुजाहिदीन को अमेरिकी सीआईए के समर्थन में प्रॉक्सी बनाया।

दक्षिण एशिया और आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक युद्ध

1990 के दशक में अफगानिस्तान से सोवियत संघ ने अपनी सेना वापस बुलाई तथा पाकिस्तान से आतंकवादी भारत के विरुद्ध भेजे जाते रहे। 1998 में दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण किया गया, जिससे एशिया को वैश्विक फ्लैशपॉइंट माना जाने लगा। संयुक्त राज्य अमेरिका में 2001 के 9/11 के आतंकवादी आक्रमण के परिणामस्वरूप पाकिस्तान वैश्विक आतंक के विरुद्ध युद्ध का मुख्य सहयोगी बनकर उभरा। भारत-पाकिस्तान के संबंधों में लगातार टकराव होता रहा।

दक्षिण एशिया और चीन

चीन के कारण भी क्षेत्रीय और वैश्विक भू-राजनीति के अंतर्गत दक्षिण एशिया का महत्त्व बना रहने की संभावना है। चीन दक्षिण एशियाई देशों का निकट पड़ोसी है। चीन की भौगोलिक स्थिति का लाभ निश्चित रूप से दक्षिण एशियाई देशों को प्राप्त होता है। चीन वन बेल्ट वन रोड पहल के आधार पर श्रीलंका में हंबनटोटा पोर्ट, पाकिस्तान में ग्वादर पोर्ट तथा बांग्लादेश में मोंगला पोर्ट जैसी आधारभूत परियोजनाएँ आरंभ करके दो राजनीतिक लाभ अर्जित कर रहा है। चीन की घुसपैठ पाकिस्तानी आर्थिक गलियारे तथा नेपाल में सड़क रेल परियोजनाओं के माध्यम से शुरू हो चुकी है। भारत तथा चीन के बीच सीमित संबंध बने रहेंगे तथा चीन अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ चौरंगी वार्ता में भी भाग लेगा। इस प्रकार दक्षिण एशिया की भू-राजस्व पर विशेष रूप से पाकिस्तान के साथ चीन के बढ़ते संबंध अन्य दक्षिण एशियाई देशों के लिए संकट सूचक हो सकते हैं।

दक्षिण एशिया में आर्थिक विकास और सहयोग

दक्षिण एशिया में आर्थिक दृष्टि से अनेक परीक्षण किए जाते रहे हैं क्योंकि यह क्षेत्र गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी आधारभूत मानव विकास समस्याओं से घिरा हुआ है। किसी समाज, राष्ट्र एवं क्षेत्र के आर्थिक कल्याण स्वस्थ मानव जीवन को संदर्भित करता है। सभी क्षेत्रों में समरूप विकास के परिणामस्वरूप दक्षिण एशिया में आर्थिक विकास संभावनाएँ तथा सकारात्मक जनसांख्यिकीय लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

दक्षिण एशिया में मानव विकास

संयुक्त राष्ट्र की मानव विकास सूची में मौजूद 190 देशों में से अधिकतर दक्षिण एशियाई देश निम्न स्तर पर मौजूद हैं, जैसे- नेपाल 142, बांग्लादेश 133, भूटान 129, भारत 131, पाकिस्तान 154, श्रीलंका 72वें स्थान पर है। यूएनडीपी बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) 2021 में 109 देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर आदि पर आधारित अनुभव साझा करता है। इसके आधार पर दक्षिण एशिया में विश्व की कुल आबादी का पाँचवां

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

भाग है। गरीबी की समस्या यहां जीवन को अधिक चुनौतीपूर्ण बना देती है। विशेष रूप से ग्रामीण शहरी क्षेत्रों में व्याप्त अंतर-क्षेत्रीय असमानताएँ चुनौती को और अधिक गहरा देती हैं। इसलिए आवश्यकता gSd lеL; koS l ekèku gsapQ Bks o uhfrxr mik; fd, tk,A

दक्षिण एशिया में आर्थिक विकास

दक्षिण एशियाई देशों में मानव विकास की चिंताजनक स्थिति के उपरांत भी हाल ही के वर्षों में अर्जित आर्थिक विकास दर सकारात्मक प्रतीत होती है। 1990 के दशक में दक्षिण एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक सुधारों की पहल के समय आर्थिक विकास दर लगभग 5% थी। 2000 के उपरांत तथा 2008 के आर्थिक संकट से पूर्व सभी देशों की आर्थिक दर 7% से 8% दर्ज की गई। यह वृद्धि संरचनात्मक परिवर्तन तथा उत्पादकता में विकास की सूचक है, जिससे संपूर्ण क्षेत्र में गरीबी कम हुई है, परंतु पूर्ण रूप से समाप्त नहीं। डिजिटलीकरण तथा सेवा आधारित क्षेत्रों में वृद्धि के चलते आर्थिक विकास की दर और अधिक बढ़ने की संभावना है। विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या का विशाल भाग कृषि क्षेत्रों पर निर्भर करता है। अत: कृषि आधारित उद्योगों पर अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। अधिकांश श्रम क्षेत्र वर्तमान में मौजूदा महामारी संकट के चलते सर्वाधिक नुकसान में हैं।

क्षेत्रीय सहयोग

मानव विकास तथा आर्थिक विकास में चुनौतियों के उपरांत भी क्षेत्रीय सहयोग दक्षिण एशियाई देशों में विकास को कुछ लाभकारी स्तर पर ले जा सकता है। 1985 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन का निर्माण इस दिशा में एक सफल प्रयास था, जिसके परिणामस्वरूप आरंभिक दशकों में प्रगति का स्वरूप धीमा था, परंतु गरीबी उन्मूलन तथा व्यापार उदारीकरण जैसे क्षेत्रों को विशेष महत्त्व दिया गया। सार्क के अंतर्गत राजनैतिक विषयों पर चर्चा नहीं की गई। यद्यपि विगत 5 वर्षों में भारत और पाकिस्तान के मध्य संचार प्रक्रिया का पूर्ण रूप से भंग होना सार्क प्रक्रिया की व्यवहार्यता पर प्रश्नचिह्न लगाता है। क्षेत्रीय सहयोग हेतु द्विपक्षीय दृष्टिकोण अथवा क्षेत्रीय दृष्टिकोण का परामर्श दिया जा रहा है, ताकि क्षेत्रीय समूह अपने समक्ष उठ रहे विरोध का सामना कर सकें। साथ ही तत्काल पड़ोस की अपेक्षा ट्रांस रीजनल पार्टनरशिप और भारत का बढ़ता झुकाव पहले की नीति को भी पीछे छोड़ चुका है। अब दोनों देश साथ मिलकर प्रगति की राह की ओर अग्रसर हैं तथा पहले से अधिक प्रबुद्ध अंतर-क्षेत्रीय नीति के लिए आधार निर्माण कर रहे हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. दक्षिण एशियाई क्षेत्र में प्रचलित सरकारों के विभिन्न रूप कौन से हैं?

उत्तर–दक्षिण एशिया में, पाँच देशों में संसदीय सरकारें हैं, यथा–बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल और पाकिस्तान इत्यादि। इनमें से तीन संघीय गणराज्य (भारत, नेपाल और पाकिस्तान) हैं, एक एकात्मक गणराज्य (बांग्लादेश) है और एक संवैधानिक राजतंत्र (भूटान) है। दो दक्षिण एशियाई देशों, मालदीव और श्रीलंका में या तो राष्ट्रपति (मालदीव) या अर्ध-राष्ट्रपति (श्रीलंका) सरकारें हैं, जो निर्वाचित विधायिकाओं के प्रति जवाबदेही रखती हैं और दोनों एकात्मक राष्ट्र हैं।

यूरोपीय संघ, उत्तरी अमेरिका या दक्षिण अमेरिका में 500 मिलियन लोगों की आबादी की तुलना में दक्षिण एशिया संवैधानिक लोकतांत्रिक गणराज्यों में दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र है, जहां 1 अरब से अधिक लोग लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत रहते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के तीन प्रमुख देशों, जिसमें बांग्लादेश, भारत और पाकिस्तान शामिल हैं, ने ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य के हिस्से के रूप में अपना आधुनिक लोकतांत्रिक प्रयोग शुरू किया, विशेष रूप से ब्रिटिश भारत की विधायिकाओं के साथ। सार्वभौमिक मताधिकार के मामले में श्रीलंका एशिया का सबसे पुराना लोकतंत्र है, जिसे 1931 में डोनोमोर संविधान द्वारा प्रदान किया गया था। आज सभी दक्षिण एशियाई देशों के संविधान में मौलिक अधिकार निहित हैं।

भारत और पाकिस्तान में उप-राष्ट्रीय इकाइयों का विशाल विस्तार संसदीय सरकार की एक सामान्य विशेषता साझा करता है। भारत के सभी 28 राज्य और पाकिस्तान के 4 प्रांत विधानमंडलों द्वारा शासित हैं। व्यापक लोकतांत्रिक ढाँचे के बावजूद, मानवाधिकारों के हनन, सैन्यवाद और सत्तावाद सहित लोकतंत्र के लिए महत्त्वपूर्ण कमियाँ और चुनौतियाँ हैं। इसके अलावा, इस क्षेत्र में संसदों के बीच बहुत कम सहयोग है। भारत और पाकिस्तान की राज्य और प्रांतीय सरकारों का बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के साथ शायद ही कोई जुड़ाव हो। बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे एकात्मक देशों में क्षेत्रीय और स्थानीय सरकारों का भी अपने पड़ोसी देशों में क्षेत्रीय समकक्षों के साथ संबंधों का अभाव देखने को मिलता है।

प्रश्न 2. दक्षिण एशिया में राजनीतिक दलों की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–दक्षिण एशिया में भौगोलिक संबंधों के साथ-साथ राजनीतिक दलों में भी विकास और प्रदर्शन को देखा जा सकता है। विभिन्न दक्षिण एशियाई देशों के राजनीतिक दल राष्ट्रवाद की भावना से जुड़े हैं, अर्थात् राष्ट्रवादी पहचान या राज्य अथवा राष्ट्रीय पहचान के अस्तित्व में आने से पहले ही निर्मित हो चुके हैं। उदाहरण के लिए, भारत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, बांग्लादेश में अवामी लीग और सिलोन नेशनल कांग्रेस, जिसमें श्रीलंका में यूनाइटेड नेशनल पार्टी को राह दिखाई। ब्रिटिश शासन काल से आजादी के बाद दक्षिण एशियाई देशों में लोकतंत्र के बढ़ते प्रभाव के कारण राजनीतिक विचारधारा पहचान और जातीयता के आधार पर बहुदलीय प्रणाली विकसित हुई। पाकिस्तान की पीपुल्स पार्टी,

www.neerajbooks.com